भूमिका ॥

इस पुस्तक के मूलरूप की त्रिकालीन प्रमाणिक होगये जिस समय प्रत्यक्ष का मिलना असम्भव समझा, तब वेद शास्त्र मन्त्र तन्त्र भी रहस्य में गुप्त रहते है। अतएव मन्त्र उत्तरे के लिए समय महादेवजी ने कील दिया था उसके अनन्तर शाबर मन्त्र निर्माण किये। शाबर मन्त्र कितने प्रकार के हैं यह कहने की तो कोई आवश्यकता नहीं परन्तु इस पुस्तक उत्तरार्ध में समस्त प्रयोग किया है। मन्त्रों के दो प्रकार का प्रकार प्रयोग करने में सब प्रकार की कामना से सिद्ध होती है। मारण। मोहन। वशीकरण उच्चाटन। स्तम्भन। भूत प्रेतादिकों की बाधा के दूर करना। सर्प वृश्चिक आदि विषैले जीवों का विष दूर कर उनके वश में कर लेना इत्यादि विषयों में से कौनसा ऐसा विषय है कि जिसको मनुष्य इन शाबर मन्त्रों के द्वारा सहज ही शीघ्र में सिद्ध कर सकता है॥ ॥

इसमें सब मन्त्रों की विधि मन्त्रों की साथ लिखी गई है जिन जिनकी विधि साथ नहीं लिखी है उन मन्त्रों को ग्रहण में जप कर सिद्ध कर लेना चाहिये। जिन यन्त्रों में जहां कहीं देवदत्त लिखा है वहां उसका नाम लिखना चाहिये जिसके ऊपर प्रयोग करना है। जिन २ मन्त्र शास्त्रों के महादेव जी ने कील दिया है उनका प्रकार छोड़कर इसमें अपार ग्रन्थ रूप का प्रकाश करना उचित समझा है कि उन कीलित मन्त्रों का उच्चारण करने से वे सिद्ध होते नहीं है। इसी कारण मन्त्रों के मन्त्र शास्त्र में लुप्तप्राय सा होगया है। इसमें प्रत्येक ही मन्त्र शास्त्र के उपयोगी गया है

कहते हैं। मनुस्मृति के गौरव बढ़ाने वाले यह पुस्तक प्रकाशक करते हैं मनु में ह
म उन उन्हीं के श्री मनुस्मृति के प्रति के उत्थापन उत्तम करते हैं प्रकाशन की
प्रशंसा करते हैं कि – कलियुग में पुस्तक के प्रचार सि
कलिकाल में ही की होती है। अतः यह विषय
उन्हीं के मत में ही निश्चय हो गया है कि – मनुस्मृति की महत्ता के प्रकरण तु
प्रकाशित होने के उसी कारण प्रशंसा करते हैं कि – के
किसी प्रकार के न करें॥ ॥

॥१०॥ पार्वती जी बोली कि –

॥१॥

॥ श्री महादेव जी बोले कि – पार्वती

॥२॥

॥३॥

[illegible] उस भूपाणी धनके पढ़ते वश होते हैं॥ ॥श्रीवशीकरणम्॥ ॐ नमो कट विकट घोररू
पिणी मम के मे वशमानय स्वाहा॥ प्रथम इस मन्त्रको सहस्रमें ०.... लगावे। फिर
रविवारके इससे अभिमन्त्रित करके ठौलन को उस ठौलन करते समय उसका ना
म लेता रहवे जिसे वशमें करना चाहे तो शीघ्र वशीभूत होते हैं॥ मन्त्र॥ ॐ नमो
ह्रूं ल्यय ९ वशं करि ल्यय ९ सकलमनुष्यान् नमः स्वाहा॥ इसको ०.... जपलगावे फिर
रविवार या मंगलवारके उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित किया हुआ पुष्प जिसे दिया जाय
गा वह वशमें अवश्यमेव होगा॥ मन्त्र॥ ॐ नमो भगवति मातङ्गेश्वरि सर्वमापगृह्णि
सर्वंभयमाये मातङ्गि कुमारिके ल्हः ९ लिङ्गे सर्वलोके वश करि स्वाहा॥ ०....।लगाक
रे संपद मन्त्र सिद्ध होते हैं॥ ॥ [illegible] सुसमभूत्वा सुस्निग्धं
[illegible] वशीकृत [illegible]।१। [illegible] तिलके [illegible]
[illegible] तिलक [illegible]।२। [illegible] तिलकं [illegible]
सर्वे वश्य वशीकरणम् [illegible]।३। [illegible] तिलकं [illegible]
[illegible]।४। [illegible]
[illegible] सर्वलोक वशंकरम्।५॥ ॥मन्त्रनिधि॥ या [illegible] या [illegible]
रे तिलसे [illegible] तिल [illegible]। [illegible] लौंग की [illegible]
[illegible] निकट होके जिसको [illegible] मन्त्र [illegible] उसकी [illegible]

[illegible] २०७५-१६

भ. ८

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पन्तुं यन्त्रितुष्टियः पंसह्नसवसः सोऽहं यन्त्रकान्तं पिनस्मसूक्ष्मं यंजमितं॥ कृष्णः
प्रसमं यन्त्रितुतं सपरिपूयतु॥१॥ पर्पके वेतताहुयः प्रलंयाह्नमलान्तितम।
उभ्युलेन प्रुन्तदृश्मवपूर्तेठवहूवमा॥३॥ उन्तः प्रलनम ह्नु हर्तीयमन्तु लठ
वयेष्ठु यञ्चैपृलीवतठंजेमवहेठेवातिपूसमा॥८॥ ॥द्वितीयमन्त्रः॥ ॥ॐ क्रीं
टि सिटि सामऽ काली काली महाकाली कंकाले मवमूमानयमुण्ड॥ मघु
ठिवमयेश्वंस्विवमेविठेनाभन विलिप्युतन्लपद्धुं भानूनामापविकाठितमा॥०॥
निविधूकीटेपाल्विड्रबंवमयेहूपभा उत्लपइलिपिद्वंठहूकालीगठाय
नेउ वभूय मवबन्तुनंपूयेणैयमन्हुतः॥१॥ मङ्गलउ अमन्त्रके उन्नपत्रपे
लिपके तब साबूका नामठी लिखे। कनेरका फूल तब लाल रागर लेके
उसमें उन्नपत्रके डालदे। तब गड़ीके समय उसपाह्नके अग्निमें स्वकरदे।
प्रयठें का ०... वन मन्त्रका लाप करे उस रूका ७ दिन पदत करने में
लिखके उपर प्रयोग किया एपदिद ठसमें देना॥ ॥सिद्धिमन्त्रः॥ ॥ठाप्य
रिडाली मधुयेष साहित ठान्नुरे स्कठेन ठत्ती भाता कुकास पिता ठ७ श्री
परमेश्वरी कालिका की वाचा फुरउ मन्त्र कैव कीतान्लहुय मघवाठिका भूम
हुता॥ ॥प्यामन्ठाबेके मन्त्रः॥ ॥ ॐ नमः नमः स्वीप सीपमजापजाप
मऊउ लानुतमल फरिकापा साँतेह्नठ वयावतमला फुनमत्र वयावतमला ठी

[illegible]

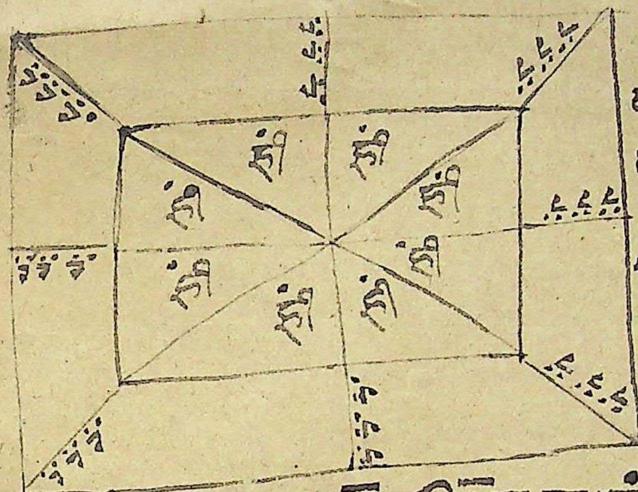
[illegible]

[illegible]

ਕਿ ਸੇਖਤਾਂਕੇ ਕਰੂ ਸਕਾਤਕਾਟ ਲੈਂ ਮਨ ਮਦ ਕੈਠਨਾਵੈ॥ ॥ਮਨੂ ਸ੍ਰੀਨਾਕੇ ਲੈਨਾ ਸੁ
ਰੈਲਕੇ॥ ॥ਏਕਾਤ ਪਾਨਾ ਕਾਤ ਕੇ ਨੈਨ ਪਾਨੀ ਸੇ ਨਾਰਿ ਤੋ ਲੈਨਲਿਕ ਨਵਦੇ ਤਰ੍ਹਤਿ
ਦਤ ਤੁਰੰਤ॥ ਤੰ ਪੂਰਵ ਪਸ਼੍ਚਿਮ ਉਤਰ ਦਖਿਨ ਨਾਕਿ ਮਨ ਪਤਾਲੁ ਸੁਸ਼ਰੂਰ ਪਾ ਸੰਕਾ
ਰਪਾਟ ਵਿਸ਼੍ਨੋਨਾ ਨਰਤ ਸੰਧਨਾ ਆਗਲਨ ਤਲਵਨਾ ਧਿਸੈਰਾਵ ਫੁਲੈਲ ਲਵੰਗ
ਸੈਪਾਰੀ ਲ ਮਦ ਤੇਲ ਸੁਵਟਨ ਤਵਟਨ ਤਾ ਸੁਵਨਦਾਸ ਪਡਿਲ ਲਵੰਗਾ ਸਾਰੀ ਲਕਸੈਰਾ
ਸੈਲਿਧਾ ਸਾਸਰਿ ਸੀਨ ਮੈਟ ਫੁਤਾਂ ਤਕਨ ਸੀਨ ਸਕ੍ਰਾ ਗੋਰਾ ਕੇਤੁਪਾਲਾ ਪਡਿਲ ਸਾਰੈਂਵਾ
ਰੰਦਾ ਕਾਦਾ ਤਿਲਕ ਲਿਲਾਟ ਸ੍ਰੰਧਿ ਨਾਕ ਕਾਨ ਕਧਾ ਮਦ ਸੋਟੀ ਕਾਰ੦ ਸੁਧਕੰਧਕੰ
ਠ ਰਾਦ ਦਵ ਗੈਂਤ ਸਤੁਰੀ ਨਾਧ ਧੁਕਧੁਕੀ ਸੁਸ਼ਲ ਨਾਠੀ ਪੱਟੀ ਨੀਨਿ ਲੈਨਿ ਸਾਲਿ ਕਤ
ਰੇਟੀ ਪੀਠਿ ਕੁਸ਼ਿ ਸਾਵ ਤੰਪ ਪਤੁਰੀ ਪੁਠੀ ਪਾਵਤਰ ਕੁਧਾ ਸਤੁਰੀ ਸਾਸ ਰਤੁ ਮੰਸ ਕੰਦ
ਗੁਲੀ ਧਾਤੁ ਲ ਨਵੀ ਵਾਤੁ ਸਤੁਗੀ ਕੋਠੀ ਕਟਿਲ ਪਿਤੁਦੀ ਪਤੁਲਿਧ ਖੂਲ ਸਰ ਰਿਤ
ਰਤ ਚਕ ਮਨੇ ਦਤੁ ਧਨ ਨਰਸਿੰਹਕਿ ਸੁਤ ਕਰਕ੍ਰਨ ਲਾਤੁ ਤੰਸ ਪਿਤਰ ਗਨ੍ਹ
ਕਾਨ੍ਹ ਲੈਦਤਪ ਸੈਨ ਸਾਸ ਪਾਟ ਪਟਵਸਨ ਰੋਗ ਲੈਗ ਕਾਲ ਸੀਸਨ ਜੀਠਿਸਿ
ਟੋਨਾ ਬਾਧਕ ਨਵਨਾਥ ਸੈਨਾਸੀ ਸਿਧੂ ਕੇ ਸਾਧ ਤਾਤਨਿ ਥੈਗਿਨਿ ਡਾਕਲਿ ਭੂਤ
ਚਾਪਿ ਪੀਚਾ ਲੈਦਤਠਨੇ ਗੈਗਾਧ ਦੇਵ ਸਾਸ ਖੂਸਟ ਦਿਲਾਤਕਾਲੀ ਤੁਰੂ ਰੈਵ
ਕੀ ਕੰਕ ਛੂਸਿਮਦੂ ਰੰਸ਼ੁਰੈਵਾਸ॥ ॥ਮਦੂਵੈਨਾਰਕ॥ ॥ਤੰਕਸੈ ਸੁਲਾਪਾਲ
ਕੀ ਸਕਾਂ ਲੈਠਾ ਨਦੇ ਤੋ ਮਕਾਸੈਵ ਕੀ ਸਕਾਂ ਛੂਸਿਮਦੂ ਰੰਸ਼ੁਰੈਵਾਸ॥ਤਸ ਮਰੂ ਕੇ ਸਾ

३१ बार पढ़के रात्रि को डार न रहे॥ ॥अष्टम॥ ॥अमृतें उत्कुल उपर्योगत्य
वाचः उत्पन्न अन्यत्र डाग्यपत्रिमर्मो क्लिमसा॥ इस मन्त्र के पढ़ १ के उपाय
रात्रि को डार न रहे॥ ॥मन्त्र डार रात्रि के॥ कारी उकरी अउ थिल्ला द्वारं अउ उ
ठ पिष्टुं लिखतुं वाश्य पर उल्लेकं खुलाय्ये के मंत्र तीन रड मन्त्र पढ़के १ दक्षिण
दब में स्तुंभा भीस्त्ड कुके रोगी के रोग कुवाउ॥ ॥द्वितीयप्रयोग॥ ॥ओं ठग
पवि ठग ठगाअयिनी अमुकी अमवश्य उमन १ स्वाहा॥ इस मन्त्र से गुरुवार केल
वल के अभिमन्त्रित करके स्त्रि स्त्री के खान पान में दे वह अवश्य वश में होगी॥ ॥
द्वितीयमन्त्र॥ ॥ओं ह्रीं मदनमत्त सौभाग्यलिनि अमुकी पश्यपश्य ... अ
ब भव स्वाहा॥ रविवार के दिन स्त्रि के नाम लेकर पुष्प ... मकान में हेमक
रे वेद वश में होगी॥ उपरोक्त मंत्र के पुरश्चरण करते समय १०.... जापक
रने से सिद्धि होती है॥ ॥अष्टमन्त्र॥ ॥ओं कामिनी रञ्जिनी स्वाहा॥ अनेन मन्त्रेण
लक्तकेन स्त्रियः करतलं लिप्येत् आवश्यं भवति॥ ॥अष्टप्रयोग॥ ॥ओं उन्मनी
स्वाहा। इस मन्त्र से १०३ बार पुष्प के अभिमन्त्रित करके स्त्री के अंगना में वश में हो
गी॥ ॥द्वितीयमन्त्र॥ ओं नमो नमः पिशाची ... त्रिलोकं ... सिंदूर ... अमु
की मेवश्य मानय १ उमन १ स्वाहा॥ इस मन्त्र के ... के ऊपर लीपकर स्त्रि
के नाम लेके धूप देवे वश में होगा। परन्तु इस मन्त्र के ७ अखबार १० दिन सिद्ध कर

[illegible]



यह कामिनी यन्त्र लिखते। मलते रविवार के दिन
वाम ऐं एवं कुंकुम से भोजपत्र पर लिखते उसका श्री वस्त्र
ते॥ अथ मन्त्र प्रयोग॥ ॥ॐ नमः विधू कामिनि
अमुकीं मे वश्यमानय मानय स्वाहा॥ फलं: कालरी
मनुष्य पावन कर्के लालरी लाटि [illegible]
लेकर । [illegible] मन्त्र पढ़के उस लाल के पीवे उ
स पुरुष [illegible] कर्ने से श्री वस्त्र में
देती है॥ [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]॥०॥ ॐ [illegible] क्लीं कर क्लीं काम पिशाच अमुकीं [illegible] मम
[illegible] विमा [illegible] स्वाहा॥ ॥द्वितीय मन्त्र॥ ॥
ॐ [illegible] क्लीं कर क्लीं काम पिशाचि अमुकीं काम [illegible] मम [illegible]
[illegible] स्वाहा॥ उपरोक्त दोनों मन्त्रों की [illegible]
दे लेवी [illegible] पढ़ले मन्त्र की विधि करी गई है॥ ॥अथ मन्त्र प्रयोग॥ ॐ ०:०:०:०: अमुकीं
मे वश्यमानय मानय। ह्रीं क्लीं [illegible] क्लीं स्वाहा। श्री [illegible] नमः॥ [illegible] मन्त्र के ०.... [illegible]
[illegible] के लिए [illegible] कर्ने से सिद्ध होते हैं॥ [illegible] के प्रयोग कर्ने की यह विधि है कि [illegible]

वा के लिये ९ का भुट सवा पाव मखीन घी मका० रोटी रना के रले उस मद्य ९ श्रृंग पासे
के। एक की तरफ से के ब्रह्म की तरफ न से के एक की तरफ मे किसी से के कि-- दोनों तरफ
सिक एवे। फिर लिखा से की बदंदे उपर मन्त्र लिखे। सिन्दूर के पानी में घोलक
र उसकी अङ्गुली से मन्त्र लिखना चाहिये। फिर उसकी पाँच पला धूप करे। सिन्दूर
रजी जल मीनी उस रोटी के ऊपर लगाना। यह मन्त्र यन्त्र उस प्रकार लगानी लिखे
में सब रोटी एक एवे। उस प्रकार करके लिखे बसमें करना है उसका नाम लेकर
र उस मन्त्र का ०३ बार जप करे। उसके बाद मन्त्र ५०९ के उस रोटी के टुकड़े करके
के काले कुत्ते को खिलावे। उस प्रकार करने से अवश्य वस में होगा प्रत्यक्ष की बात
सी यह है। मन्त्र पत्र स्थानी धान दीपक गौ के घड़क नाव [illegible] रखिये। उ
स मन्त्र का पाठ [illegible] करते समय धूप ऊद्दे से रखना चाहिये॥ ॥ अथ विद्वेषण के मन्त्र॥
पानी के बीच पढ़िके मन्त्र अतुरे डली मंत्र एक। स[illegible]तिसक हुण्ड स्वदंस
कूसहिते स्वतुधे स्वाहा पुत्र्यां नेद्रं गौ पूल स्वहते॥ ॥ उली अथ विद्वेषण के मन्त्र॥
ॐ वन्द विद्युतं वानरी लाकं ९ हनिवत् अथ पीड़ कषावरी गिद्धिया खरे
लाउ स्वाहि तरफ उ नमस्ते गुरु की शक्ति मेरी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा॥ अथ पाठ दखे
[illegible] मन्त्र वा पढ़के फूंके तो द्वेष [illegible] पीड़ा नहीं है॥ ॥ उच्चाटन के मन्त्र॥
॥ इसि श्री के वसमें करना देख ले काली जतियाँ के रोटी पवनी चाहिये॥ ॥ इसि एक न प्राय जो इसो जते नखद जोतिया
के पवनी चाहिये॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

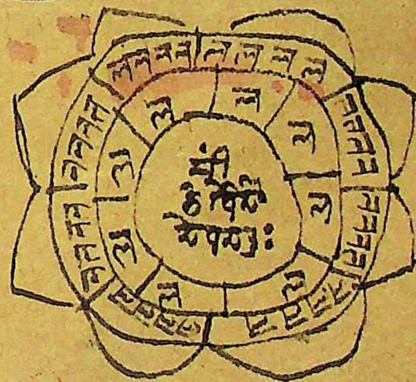
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

…ऋषिः श्रीं कामदेवो देवता वशीकरणे विनियोगः ॥ षडङ्गन्यासः ॥ कं कृष्णाय नमः ॥ कीं मि
…॥ ॐ कामदेवाय … सम्मुखं कुरु ॥ स्वाहा ॥ … ॥
…गगनाय … ॥ ॐ कामदेवा
य सर्वजनप्रियाय सर्वजनसंमोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल सर्वजनस्य हृदयं मम वशं कुरु कुरु
स्वाहा ॥ इस मन्त्र को १०००० जाप करने से सिद्ध होता है। … फिर इस मन्त्र से … लीक
… उसके ऊपर लिखे मन्त्र से ०३॥
… के प्रतिमन्त्रित करके उस भस्म का तिलक लगावे। जिस स्त्री के …
… उसका ध्यान करके वश में अमुक … को … वश होगा ॥ ॥ … ॥
… ॐ श्रीं … नमः ॥ … इस मन्त्र को प्र
योग करने की यह विधि है कि ॥ यन्त्र ॥
अमुक स्त्री का ध्यान करके …
लाख जाप ०.... जप करे उस …
… करने से अमुक स्त्री की
वश होगी ॥ उस यन्त्र को … के ऊपर …
… लिख कर जिस का …
… करावे उसका नाम लिखे …
… करे तो अमुक वश होगा ॥ ॥



एक पुतला बनाके आगे उस श्मशानी लकड़ी मुर्दे का छाती के ऊपर लिपि मन्त्र का लिख
करै आकर्षणीय पैदा के १०८ उसने की लपन एक दिन उस पुतले के आगे उस प्रकार १०८
आकर्षण करै १०० फिर आगे जप पूर्ण होवे एक उस तरह मन्त्र जितना करने से मुर्दे के
उठ लगेगा॥ आगे उस मन्त्र के उसी प्रकार १० जितने करते मुर्दा कपाल छोड़ देवेगा॥
॥ मुर्दे के वश करने का मन्त्र॥ ॥ [illegible] करि ५ [illegible] का [illegible]
[illegible] के [illegible] तीन [illegible]॥ उस मन्त्र के सिद्ध योग में १०३।
[illegible] सिद्ध करने को करके में [illegible]। उस मन्त्र के ५० जितने
[illegible] के लिये उस प्रकार [illegible] के लिये [illegible] निकल [illegible]
[illegible] उस [illegible] के करने में [illegible]॥ ॥ [illegible]॥ ॥ [illegible] निकल
[illegible] मरे [illegible] से [illegible] की॥ ॥
[illegible] में [illegible] उसके ऊपर [illegible] के लिये।
[illegible] के आप [illegible]। एक [illegible] दीपक [illegible] के [illegible]
[illegible]। एक पैसे [illegible] एक पैसे की पूरी, सूत [illegible]। [illegible] की [illegible]
[illegible]। [illegible] के [illegible]। एक नीबू। [illegible] के श्मशानी [illegible]
[illegible] की [illegible]। उसके [illegible] के [illegible]। उसी प्रकार १०
जितने करना [illegible]। नीबू [illegible] दीपक के [illegible]। [illegible] १०० वार नीबू के [illegible]
उ करके नीबू के [illegible] उस प्रकार ५० दिन करने से मुर्दे के उदर में पीड़ा होगी [illegible]
करने से [illegible]॥ ॥ वशीकरण प्रयोग॥ ॥ [illegible]